“अपने पूरे हृदय से प्रभु के प्रति विश्वास बनाए रखना” का
क्या अर्थ है? (प्रेरितों के काम 11:23, ESV)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

सवाल:

जब प्रेरितों ने एंटिओक में नए विश्वासियों को “स्थिर उद्देश्य से प्रभु के प्रति विश्वास बनाए रखने” के लिए प्रोत्साहित किया, तो उनका क्या मतलब था? इस उपदेश के पीछे गहरा आत्मिक अर्थ क्या है?

शास्त्र का संदर्भ – प्रेरितों के काम 11:22–24 (हिंदी बाइबिल)

22 इस बात की खबर यरूशलेम की कलीसिया के पास पहुँची, और उन्होंने बरनबास को एंटिओक भेजा।

23 जब वह वहाँ आया और परमेश्वर की कृपा को देखा, तो वह आनंदित हुआ और उसने उन्हें दृढ़ निश्चय से प्रभु के प्रति विश्वास बनाए रखने की प्रेरणा दी,

24 क्योंकि वह एक अच्छा मनुष्य था, जो पवित्र आत्मा और विश्वास से भरा हुआ था। और प्रभु के पास बहुत से लोग जोड़े गए।

उपदेश को समझना

“अपने पूरे हृदय से प्रभु के प्रति विश्वास बनाए रखना” का
क्या अर्थ है? (प्रेरितों के काम 11:23, ESV)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

बरनबास का एंटिओक में नए ग्रीक (गैर-यहूदी) विश्वासियों को – “प्रभु के प्रति स्थिर निष्ठा से विश्वास बनाए रखना” – केवल एक सामान्य प्रोत्साहन नहीं था। यह एक आवश्यक धार्मिक निर्देश था, जो उनके विश्वास को गहरे और पूरी तरह से मसीह में जड़ित करने के लिए था, उनके हृदयों को पूरी तरह से प्रभु के प्रति समर्पित करने के लिए।

ग्रीक शब्द “स्थिर उद्देश्य” (πρόθεσις τῆς καρδίας) का शाब्दिक अर्थ है “हृदय का प्रकट उद्देश्य”। इसका मतलब है, पूरी तरह से समर्पित होना, न कि भावनाओं या बाहरी आशीर्वादों से प्रेरित होना, बल्कि एक सचेत और आंतरिक निर्णय से मसीह का अनुसरण करना – चाहे जो भी क़ीमत हो।

सही उद्देश्य का महत्व

संपूर्ण शास्त्र में, परमेश्वर हृदय के उद्देश्य के प्रति गहरी चिंता दिखाते हैं। सत्य हृदय से विश्वास बनाए रखने का आह्वान महत्वपूर्ण था क्योंकि कई लोग मसीह का अनुसरण गलत कारणों से कर सकते थे: व्यक्तिगत लाभ, सामाजिक स्थिति, चमत्कारों या आशीर्वादों के कारण।

“अपने पूरे हृदय से प्रभु के प्रति विश्वास बनाए रखना” का
क्या अर्थ है? (प्रेरितों के काम 11:23, ESV)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

लेकिन सुसमाचार पाप से पश्चाताप और मसीह को उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में विश्वास करने का आह्वान करता है (मरकुस 1:15; रोमियों 10:9)। एक सतही या आत्म-लाभकारी विश्वास परिक्षाओं या अत्याचारों को सहन नहीं कर सकता (मत्ती 13:20–21)।

इब्रानियों 4:12 (हिंदी बाइबिल)

क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित और प्रभावी है, और किसी भी दोधारी तलवार से तेज़ है, जो आत्मा और आत्मा, और हड्डियों और मज्जा के बीच विभाजन करता है, और हृदय के विचारों और इरादों
को समझता है।

यह वचन हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर का वचन हमारे विश्वास के असली उद्देश्य को उजागर करता है। वह देखता है कि हम मसीह का अनुसरण प्रेम और सत्य से करते हैं, या सिर्फ अपनी सुविधा के लिए।

“अपने पूरे हृदय से प्रभु के प्रति विश्वास बनाए रखना” का
क्या अर्थ है? (प्रेरितों के काम 11:23, ESV)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

सच्चा विश्वास सुसमाचार में निहित है

बाइबिल में विश्वास लेन-देन (यानि “मैं मसीह का अनुसरण करता हूं ताकि वह मुझे आशीर्वाद दे”) नहीं है; यह रूपांतरण है। इसका अर्थ है, यीशु मसीह के प्रायश्चित मृत्यु और पुनरुत्थान पर विश्वास करना, ताकि पापों की माफी मिल सके (1 कुरिन्थियों 15:3–4), और हमारा जीवन उसे प्रभु के रूप में समर्पित करना (लूका 9:23–24)।

2 कुरिन्थियों 5:15 (हिंदी बाइबिल)

… और वह सब के लिए मरा, ताकि जो जीवित हैं, वे अब अपने लिए न जिएं, बल्कि उस के लिए, जो उनके लिए मरा और जी उठा।

अगर हम मसीह का अनुसरण केवल भौतिक लाभ या आराम के लिए करते हैं, तो हमारा विश्वास कमजोर होगा, जो कष्टों का सामना नहीं कर सकेगा। लेकिन वे जो मसीह का अनुसरण पाप से मुक्ति पाने, पवित्रता में चलने और परमेश्वर की महिमा करने के लिए करते हैं, वे कष्टों में भी स्थिर बने रहते हैं (फिलिप्पियों 1:29; याकूब

“अपने पूरे हृदय से प्रभु के प्रति विश्वास बनाए रखना” का
क्या अर्थ है? (प्रेरितों के काम 11:23, ESV)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

1:12)।

नई विश्वासियों के लिए क्यों यह उपदेश महत्वपूर्ण है

प्रेरितों को पता था कि प्रारंभिक कलीसिया को पीड़ा, गलत शिक्षाओं और आत्मिक विचलन का सामना करना पड़ेगा। इसलिए, बरनबास ने तुरंत समर्पण की नींव पर जोर दिया। एक कलीसिया जो सत्य पर आधारित होगी, न कि प्रवृत्तियों या लाभों पर, दबाव के तहत फलने- फूलने और सुसमाचार को सत्य रूप से फैलाने में सक्षम होगी।

आज भी, नए विश्वासियों को यही सिद्धांत सिखाना आवश्यक है: मसीह का अनुसरण करना उसके कारण, न कि हमारे लिए जो हम उससे चाहते हैं।

लूका 14:26–27 (हिंदी बाइबिल)

यदि कोई मेरे पास आता है और अपने पिता, अपनी मां, पत्नी,
बच्चों, भाइयों और बहनों, यहां तक कि अपने प्राणों से भी
घृणा नहीं करता, तो वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता। और जो अपना क्रूस नहीं उठाता और मेरे पीछे नहीं चलता, वह मेरा शिष्य

“अपने पूरे हृदय से प्रभु के प्रति विश्वास बनाए रखना” का
क्या अर्थ है? (प्रेरितों के काम 11:23, ESV)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

नहीं हो सकता।

यह दिखाता है कि सच्ची शिष्यता जीवन की प्राथमिकताओं को पूरी तरह से बदलने की मांग करती है, जिसमें मसीह केंद्र में होता है।

सही हृदय: मसीह का अनुसरण सही कारणों से करना

हृदय का सही उद्देश्य यह है:

मसीह का अनुसरण करना ताकि पाप से मुक्ति मिले
परमेश्वर को जानना और प्रेम करना जैसा वह सच में है
मसीह को उद्धारकर्ता और राजा के रूप में आदरपूर्वक जीवन जीना
शाश्वत जीवन को मूल्य देना, न कि अस्थायी आशीर्वादों को

यूहन्ना 6:26–27 (हिंदी बाइबिल)

यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, “सच सच कहता हूँ, तुम मुझे

“अपने पूरे हृदय से प्रभु के प्रति विश्वास बनाए रखना” का क्या अर्थ है? (प्रेरितों के काम 11:23, ESV)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 7

इसलिये नहीं खोज रहे हो कि तुम ने चमत्कार देखे, बल्कि
इसलिये कि तुम ने रोटियाँ खाई और तृप्त हो गए। जो नाशवान
भोजन है उसके लिये परिश्रम न करो, बल्कि उस भोजन के लिये परिश्रम करो जो शाश्वत जीवन तक रहता है…”

यीशु के समय में बहुत लोग चमत्कारों और आशीर्वाद के कारण उनका अनुसरण करते थे, लेकिन जब उनकी बातें उनके हृदयों को चुनौती देतीं, तो वे उन्हें छोड़ देते थे (यूहन्ना 6:66)। आज भी यही सत्य है। एक स्वार्थी हृदय चला जाएगा; लेकिन जो हृदय मसीह में जड़ित है, वह बना रहेगा।

निष्कर्ष: स्थिर हृदय से विश्वास बनाए रखें

बरनबास के शब्द कालातीत हैं। परमेश्वर आज भी हमें स्थिर उद्देश्य से प्रभु के प्रति विश्वास बनाए रखने के लिए बुला रहे हैं – एक सचेत, ईमानदार हृदय जो मसीह को सब से ऊपर रखता है।

आइए हम एक ऐसा सुसमाचार सिखाएं और जीयें जो भावनाओं, समृद्धि या लोकप्रियता से कहीं गहरा हो। आइए हम यीशु का अनुसरण करें

“अपने पूरे हृदय से प्रभु के प्रति विश्वास बनाए रखना” का
क्या अर्थ है? (प्रेरितों के काम 11:23, ESV)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 8

क्योंकि वह योग्य है, क्योंकि वही उद्धार करता है, और वही मार्ग, सत्य और जीवन है (यूहन्ना 14:6)।

कुलुस्सियों 2:6–7 (हिंदी बाइबिल)

जैसे तुम ने मसीह यीशु, प्रभु को ग्रहण किया, वैसे ही उसमें
चलो, उसमें जड़ें जमा कर और विश्वास में स्थापित हो कर, जैसे तुम्हें सिखाया गया है, और धन्यवाद में भरपूर हो।

परमेश्वर तुम्हें आशीर्वाद दे और तुम्हारा हृदय अपने साथ स्थिर बनाए रखे।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp